देखने की क्रिया और पूर्वाग्रह

ताज़ा शोध से पता चला है कि हमारे देखने पर इस बात का गहरा असर होता है कि हम क्या अपेक्षा करते हैं और हमारा नज़रिया क्या है। दूसरे शब्दों में, हमारी दृष्टि को हमारे पूर्वाग्रह प्रभावित करते हैं।

एम्सटर्डम विश्वविद्यालय के यैर पिंटो और उनके साथियों ने नेदरलैण्ड के 45 व्यक्तियों को एक काम करने को दिया। संज्ञान तंत्रिका विज्ञान की भाषा में इस कार्य को द्विनेत्र प्रतिस्पर्धा कार्य कहते हैं। इसमें किया यह जाता है कि दोनों आंखों को अलग-अलग चित्र दिखाए जाते हैं। पहले एक चित्र में कॉन्ट्रास्ट अधिक रखा जाता है। ऐसी स्थिति में वह चित्र हमारी दृष्टि पर हावी रहता है। फिर इस चित्र का कॉन्ट्रास्ट कम करते हुए दूसरे का कॉन्ट्रास्ट बढ़ाया जाता है। एक समय ऐसा आता है कि पहले चित्र की अपेक्षा दूसरा चित्र हावी होने लगता है। इसका पता ऐसे चलता है कि जहां पहले हमें पहला वाला चित्र ही दिखाई दे रहा था, वहीं थोड़ी देर में दूसरा वाला चित्र दिखाई देने लगता है।

उपरोक्त 45 व्यक्तियों को जो दो चित्र दिखाए थे, उनमें से एक में कोई पैटर्न होता था और दूसरा एक चेहरा होता था। यह चेहरा किसी गोरे व्यक्ति का, मोरोक्को मूल के किसी व्यक्ति का या किसी अश्वेत व्यक्ति का होता था। शुरू में पैटर्न वाले चित्र का कॉन्ट्रास्ट अधिक रखा जाता था और फिर धीरे-धीरे पैटर्न का कॉन्ट्रास्ट कम करते हुए चेहरे वाले चित्र का कॉन्ट्रास्ट बढ़ाया जाता था। व्यक्ति को करना यह होता था कि जैसे ही चेहरा नज़र आने लगे, वैसे ही एक बटन दबा दे।

इस प्रयोग में देखा गया कि इन 45 व्यक्तियों को गोरा चेहरा दिखाई पड़ने और मोरोक्को व अश्वेत व्यक्तियों के चहरे देखने में सेकंड के 100वें भाग का अंतर पड़ा। सबको गोरा चेहरा थोड़े कम समय में ही नज़र आ जाता था।

इस प्रयोग के परिणाम *एसोसिएशन फॉर दी साइन्टिफिक स्टडी ऑफ कॉन्शियसनेस* की बैठक में प्रस्तुत करते हुए पिंटो व उनके साथियों ने कहा कि इससे लगता है कि हमारी देखने की क्रिया पर हमारे पूर्वाग्रहों का असर पड़ता है। इस मामले में व्यक्तियों के नस्लीय पूर्वाग्रह का असर दिखाई देता है।

अन्य वैज्ञानिक सहमत नहीं हैं। जैसे ब्रुसेल्स के फ्री विश्वविद्यालय के एक्सेल क्लीयरमेन्स का मत है कि विभिन्न चेहरे दिखाई पड़ने में लगने वाले समय में अंतर का सम्बंध नस्लीय पूर्वाग्रहों से नहीं है। इसका सम्बंध सिर्फ इस बात से है कि अध्ययन में शामिल सारे व्यक्ति गोरे थे और उनके लिए अपने समान चेहरे देख पाना ज़्यादा आसान होता है। इसका सम्बंध पूर्वाग्रह से नहीं बल्कि परिचय से है।

इस बात की जांच करने के लिए पिंटो अपने प्रयोग को आगे बढ़ाना चाहते हैं। जैसे वे जानते हैं कि हॉलैण्ड में रहने वाले मोरक्कन व अश्वेत लोगों में अपनी ही नस्ल के प्रति नकारात्मक छवि है। तो पिंटो चाहते हैं कि उक्त प्रयोग को इन लोगों के साथ दोहराएं। यदि दृष्टि में अंतर सिर्फ परिचय की वजह से है तो परिणाम गोरे लोगों के साथ किए गए प्रयोगों से उल्टे आने चाहिए। मगर यदि नस्लीय पूर्वाग्रहों का प्रभाव है तो नतीजे वही आएंगे कि अश्वेत लोगों को भी गोरे चेहरे थोड़ी जल्दी दिखने लगेंगे। या वे व्यक्तियों के चेहरे दिखाने की बजाय जानवरों की शक्लें दिखाकर भी पता कर सकते हैं कि क्या यह प्रयोग हमारे पूर्वाग्रहों को व्यक्त करता है। ***(स्रोत फीचर्स)***